इस्लाम को कट्टर पंथियों के चंगुल से छुड़वाओ

लगभग एक हफ्ते से मैं इस्लाम के ऊपर लिख रहा हूँ चूंकि मेरा काम आलोचना है, इसलिए हो सकता है की मेरी भाषा में कुछ तल्खी आगयी हो. लेकिन जब कोई व्यक्ति अपनी सच्ची बात जोरदार ढंग से पेश करता है तो भाषा में सख्ती आना स्वाभाविक है.

एक शायर ने कहा है -
यूँही नहीं ये मेरी जुबां पर छाले हैं,
आग बला की होती है सच्चाई में
वास्तव में मेरा विरोध इस्लाम के असहिष्णु, उग्र, कट्टर और आतंकवादी विचारों से है और उन लोगों से जो ऐसे विचारों को हवा देते हैं चाहे वह यहाँ के मौलवी-मुल्ले हों या बाहर के देश के लोग हों. यह लोग दोहरी नीति अपनाते है, दिखाने के लिए मेलजोल, भाईचारा और सुलह की बात करते हैं, लेकिन गुप्त रूप से देशद्रोहियों का समर्थन करते हैं. ऐसे लोगों के बारे में कुरआन में भी कहा गया है :**कुरआन -सूरे बकर -२:११.१२**

ऐसे लोग उस समय से इस्लाम पर हावी हो गए थे जिस समय मुहम्मद का इंतकाल हुआ था और आयशा के भाई मुहम्मद बिन अबूबकर ने दूसरे खलीफा उस्मान की हत्या की थी .इन्हीं लोगों ने हज़रत अली और जमां हुसैन को उनके परिवार के ७२ लोगों सहित निर्दयता से हत्या की थी. आज इस्लाम पर यही लोग काबिज हैं. इस्लाम में खूँरेजी, जुल्म, आतकवाद की शुरुआत तभी से हुई है. अब यह इनकी आदत बन चुका है आज मुझे अपनी लायब्रेरी में एक किताब हाथ में आयी किताब का नाम है**"हमारे हैं हुसैन"** किताब इमामिया मिशन लखनऊ से छपी है इसका इशायत नंबर ३५१ है

मैं अपने दोस्त जीशान जैदी का ध्यान चाहूँगा की वे इस किताब के पेज १२, १३, १४ को जरूर पढ़ें.

इस किताब में लिखा है जब कर्बला की लड़ाई होए वाली थी तो इमाम हुसैन ने बिन साद से यजीद को कहलवाया था की मुझे नहीं चाहिए सिर्फ मेरी एक शर्त मान लो मैं ईराक छोड़ कर हिदुस्तान जाना चाहता हूँ, वहां से मुझे मुहब्बत भरी खुश्बू आरही है|

सोचिये उस समय नातो मुसलमान थे न मस्जिद थी. उन दिनों भारत अरब व्यापार होता था. लोग काफिले से सामान ले जाते थे

पंजाब का एक ब्राह्मण रिखब दत्त, जिसके सात लडके थे, वह पांच लड़कों के साथ ईराक जा रहा था. जब उसे कर्बला की लड़ाई का पता चला, वह अपने पाँचों लड़कों के साथ

इमाम हुसैन की तरफ से यजीद की फ़ौज से लड़कर शहीद हो गए. आज भी रिखब दत्त के वंशजों को हुसैनी ब्राह्मण कहा जाता है |

इन लोगों के बारे में राही मासूम रज़ा ने अपनी कई किताबों मे लिखा है आप इस्लाम का सही रूप दिखाएँ

एक और घटना है, जो मौलाना रूमी ने अपनी मसनवी में लिखी है

एक बार कुछ लोगों ने हजरत अली के घर एक शकर की बोरी भेजी | अली ने दखा की बोरी पर एक चींटी इधर उधर घूम रही है. उन्होंने लोगों से कहा लगता यह चींटी यहाँ आने से परेशान हो रही है, जाओ इसे उसके घर वहीं छोड़ दो जहां से लाये थे

रूमी मसनवी में कहते है

"मी आजार मूरी के दाना कुशश्त के जां दारदो जां शीरीं खुशाश्त"

यानी चींटी को भी न सताओ जो दाना उठा रही है, इसमे भी जान और जान सबको प्यारी है

अगर जैदी साहेब इस इस्लाम की बात करें जो मैंने उदाहरण में बताया है. अज का मौजूदा इस्लाम वह नहीं है जो सामने आ रहा है. पाहिले इस्लाम को दहशत गिरदी से आजाद कराओ. वरना हमें काफिर ही रहने दो हमें ऐसा इस्लाम नहीं चाहिए काफिरम इश्कत मुसलमानी मिरादरकार नीस्त

बी एन शर्मा